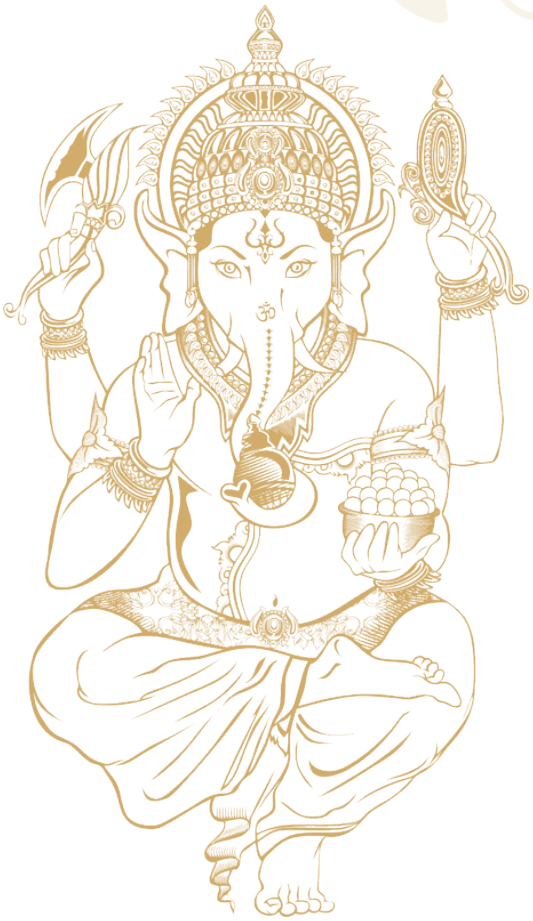

Kamlesh Laxman Rao Kote

15 Sep 1979

05:23 AM

Ahilya Nagar

Model: Web-KundliPhal **Order No: 120490901**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**14-15/09/1979**
दिवस	शुक्र–शनिवार
जन्म समय	**05:23:00 कला**
इष्ट	57:48:21 घटी
स्थान	**Ahilya Nagar**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:51:32 उत्तर
रेखांश	75:22:11 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:28:31 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	04:54:28 कला
वेलान्तर	00:04:10 कला
साम्पातिक वेल	04:27:55 कला
सूर्योदय	06:15:39 कला
सूर्यास्त	18:32:40 कला
दिनमान	12:17:01 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्याचे अंश	27:59:14 सिंह
लग्नाचे अंश	14:50:01 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	सिंह – रवि
राशि–स्वामी	**मिथुन – बुध**
नक्षत्र–चरण	**आर्द्रा – 4**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	व्यतिपात
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सिंह
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	छ–छत्रपति
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1901	भाद्रपद	24
पंजाबी	संवत : 2036	भाद्रपद	30
बंगाली	सन् : 1386	भाद्रपद	29
तमिल	संवत : 2036	अवानी	30
केरल	कोल्लम : 1155	चिमगम	30
नेपाली	संवत : 2036	भाद्रपद	30
चैत्रादी	संवत : 2036	आश्विन	कृष्ण 10
कार्तिकादी	संवत : 2036	भाद्रपद	कृष्ण 10

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 9
तिथि समाप्ति वेल _____: 25:04:59
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 07:24:10 कला
जन्म योग _____: आर्द्रा
सूर्योदय समयी योग _____: सिद्धि
योग समाप्ति वेल _____: 06:38:29 कला
जन्म योग _____: व्यतिपात
सूर्योदय समयी करण _____: तैतिल
करण समाप्ति वेल _____: 12:27:44 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 54:57:05
भभोग _____: 64:41:02
भोग्य दशा वेल _____: राहु 2 वर्ष 8 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: आषाढ़
तिथि _____: 2-7-12
दिवस _____: सोमवार
नक्षत्र _____: स्वाति
योग _____: परिघ
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: कर्क
रवि _____: मीन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: मेष
बुध _____: मकर
गुरु _____: वृषभ
शुक्र _____: मिथुन
शनि _____: कुम्भ
राहु _____: कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

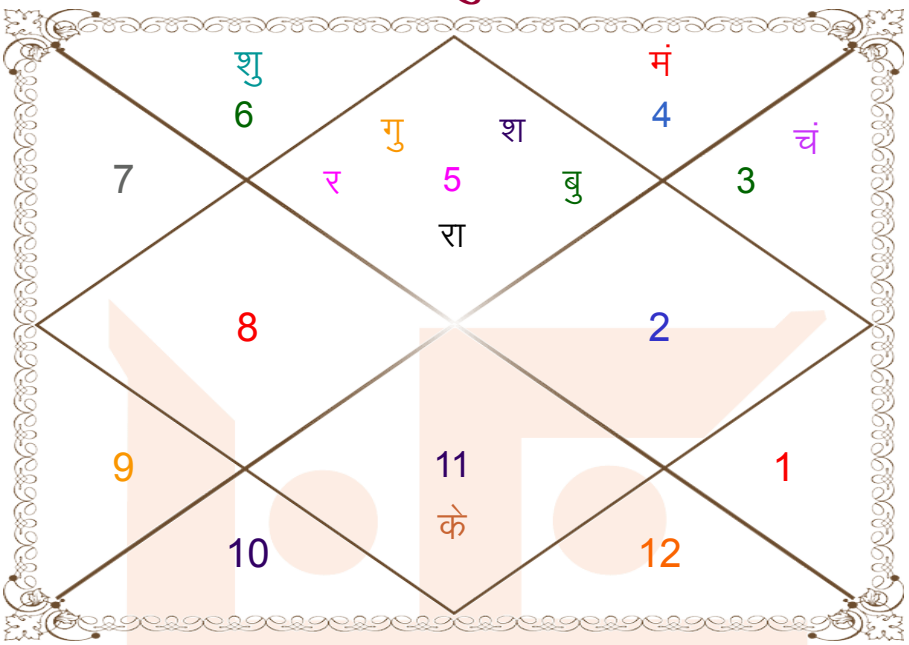

चन्द्र कुंडली

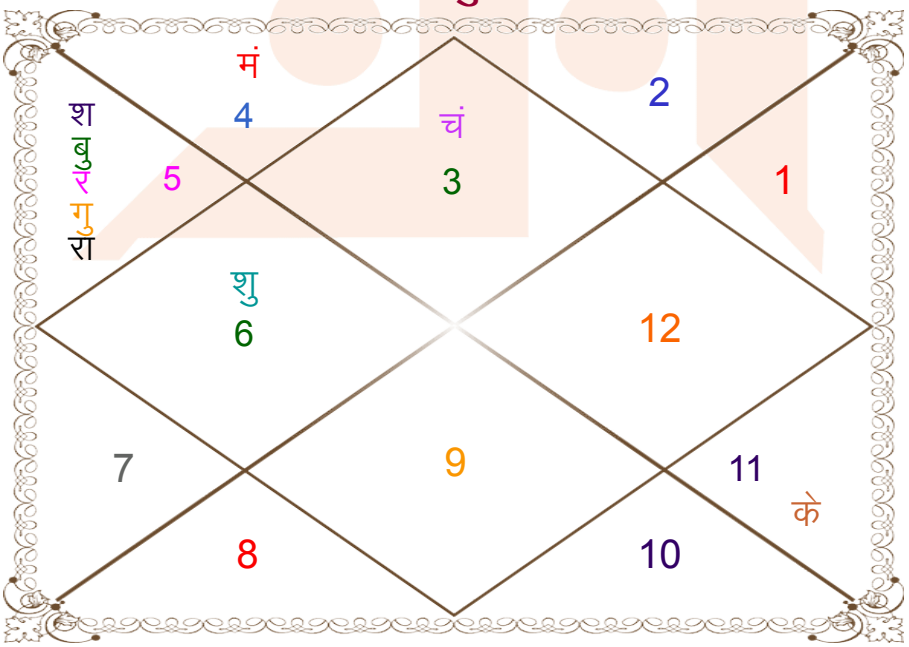

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

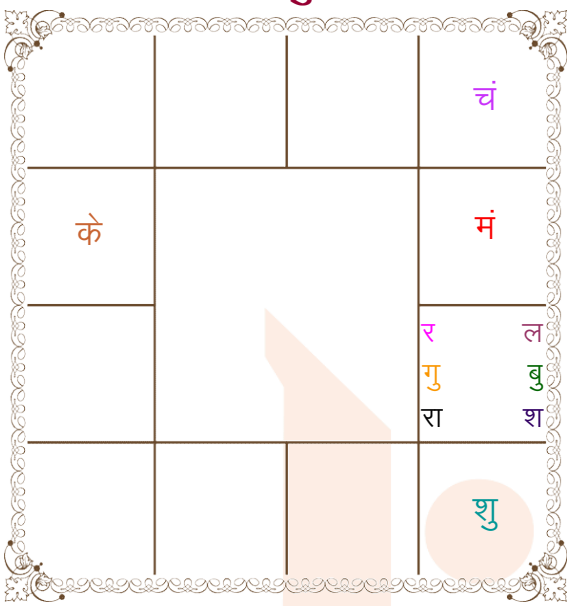

लग्न कुंडली

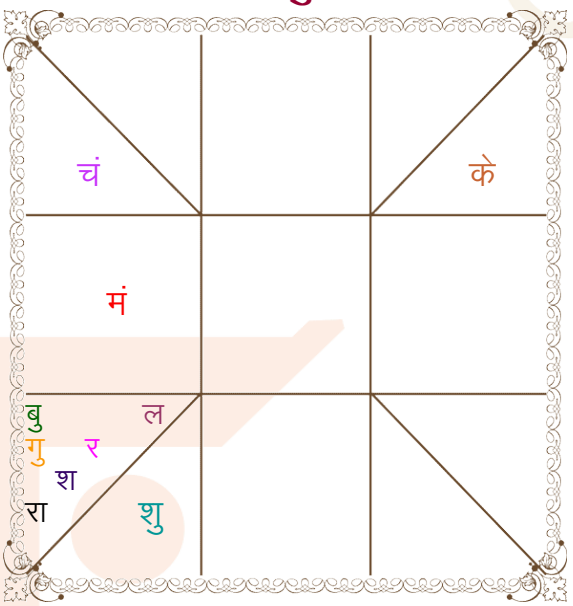

विंशोत्तरी
राहु 2वर्ष 8मा 5दि

राहु

15/09/1979

20/05/2084

राहु	21/05/1982
गुरु	21/05/1998
शनि	21/05/2017
बुध	21/05/2034
केतु	21/05/2041
शुक्र	21/05/2061
रवि	21/05/2067
चन्द्र	21/05/2077
मंगळ	20/05/2084

योगिनी
मंगळा 0वर्ष 1मा 23दि

भद्रिका

07/11/2024

08/11/2029

भद्रिका	19/07/2025
उल्का	19/05/2026
सिद्धा	10/05/2027
संकटा	18/06/2028
मंगळा	08/08/2028
पिंगला	18/11/2028
धान्या	19/04/2029
भ्रामरी	08/11/2029

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	14:50:01	335:37:33	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	–––
सूर्य			सिंह	27:59:14	00:58:28	उ.फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	स्वगृही
चंद्र			मिथु	18:00:51	12:15:47	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	सूर्य	मित्र राशि
मंगळ			कर्क	00:25:24	00:36:54	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	नीच राशि
बुध		अ	सिंह	29:33:06	01:50:37	उ.फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	मित्र राशि
गुरु			सिंह	03:29:55	00:12:31	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	मित्र राशि
शुक्र		अ	कन्या	03:33:16	01:14:36	उ.फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	नीच राशि
शनि		अ	सिंह	24:14:08	00:07:31	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
राहु			सिंह	14:51:04	00:00:55	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
केतु			कुंभ	14:51:04	00:00:55	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	शत्रु राशि
हर्ष			तुला	24:25:18	00:02:27	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	–––
नेप			वृश्चि	24:13:00	00:00:30	ज्येष्ठा	3	18	मंगळ	बुध	राहु	–––
प्लूटो			कन्या	24:28:52	00:02:11	चित्रा	1	14	बुध	मंगळ	राहु	–––
दशम भाव			वृष	15:07:46	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:34:18

लग्न–चलित

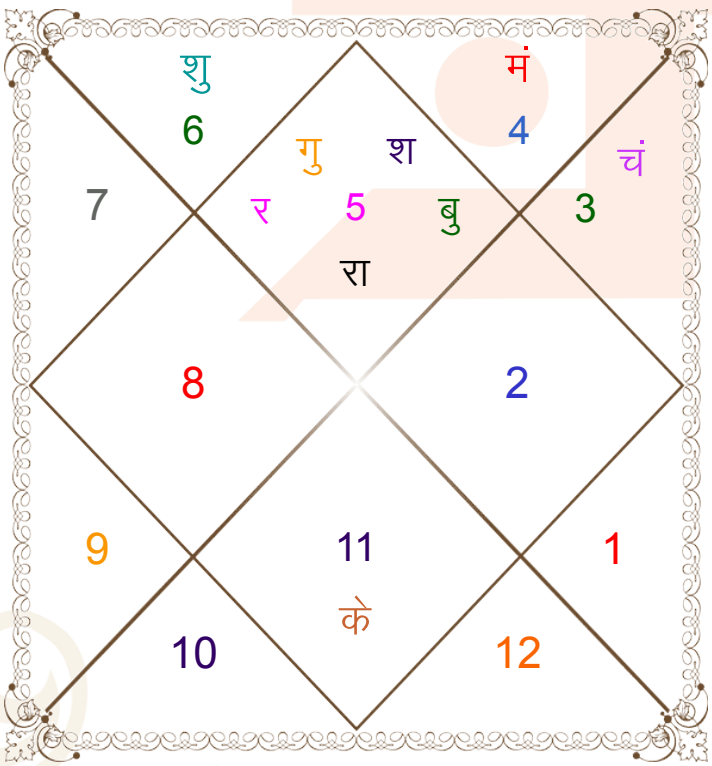

चन्द्र कुंडली

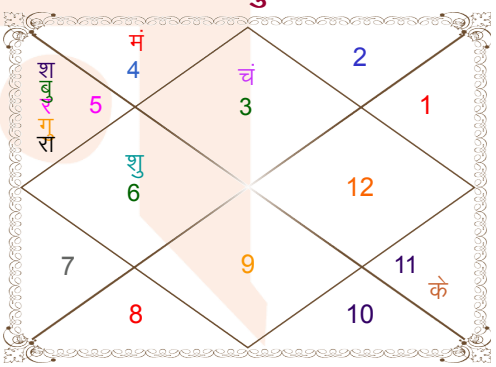

नवमांश कुंडली

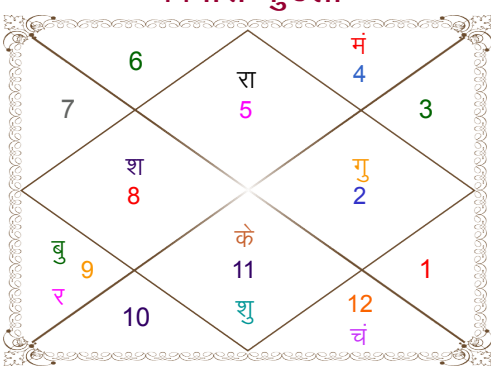

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	29:52:59	सिंह	14:50:01
2	सिंह	29:52:59	कन्या	14:55:56
3	कन्या	29:58:53	तुला	15:01:51
4	वृश्चिक	00:04:48	वृश्चिक	15:07:46
5	धनु	00:04:48	धनु	15:01:51
6	धनु	29:58:53	मकर	14:55:56
7	मकर	29:52:59	कुम्भ	14:50:01
8	कुम्भ	29:52:59	मीन	14:55:56
9	मीन	29:58:53	मेष	15:01:51
10	वृषभ	00:04:48	वृषभ	15:07:46
11	मिथुन	00:04:48	मिथुन	15:01:51
12	मिथुन	29:58:53	कर्क	14:55:56

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	14:50:01
2	कन्या	13:18:37
3	तुला	14:02:04
4	वृश्चिक	15:07:46
5	धनु	15:33:29
6	मकर	15:27:54
7	कुम्भ	14:50:01
8	मीन	13:18:37
9	मेष	14:02:04
10	वृषभ	15:07:46
11	मिथुन	15:33:29
12	कर्क	15:27:54

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

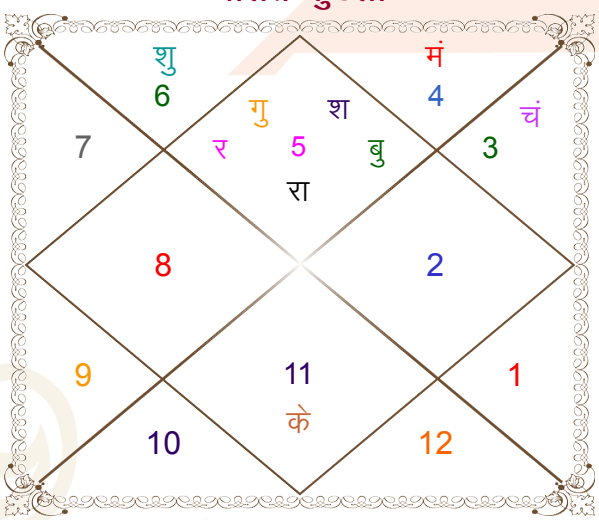

भाव कुंडली

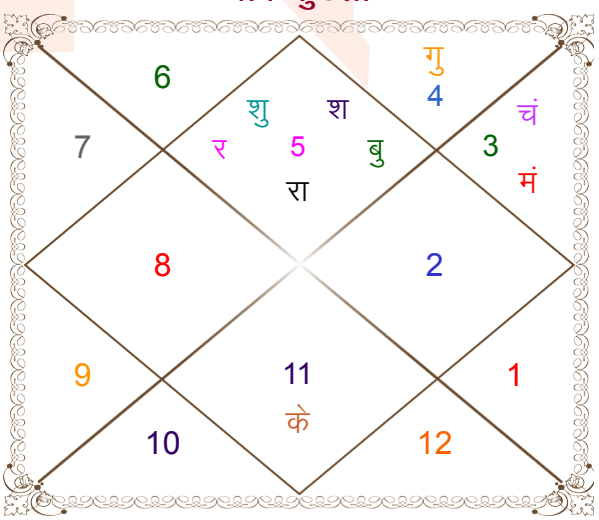

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	मृत	स्वस्थ	आगम	3.50	33 %
चंद्र	मातृ	मातृ	वृद्ध	मुदित	आगम	9.00	68 %
मंगळ	कलत्र	भ्रातृ	मृत	भीत	गमन	1.02	79 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	मृत	विकल	आगम	0.00	31 %
गुरु	ज्ञाति	धन	बाल	मुदित	निद्रा	5.89	67 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	मृत	विकल	आगम	1.39	59 %
शनि	भ्रातृ	आयुष्य	मृत	विकल	निद्रा	1.38	27 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	खल	प्रकाश	0.00	99 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	खल	आगम	0.00	99 %
एकुण						**22.18**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

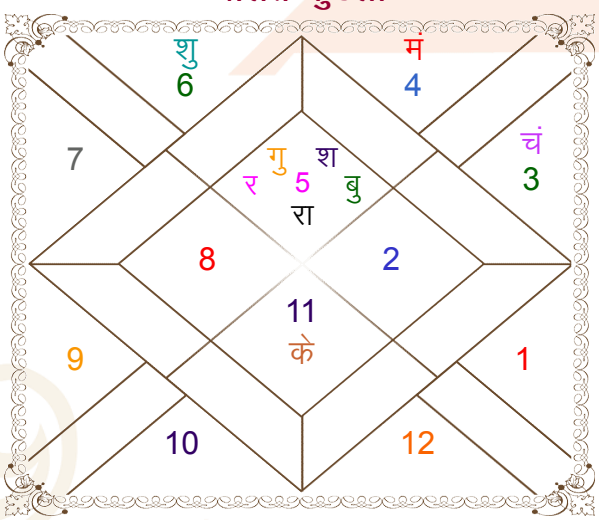

लग्न–चलित

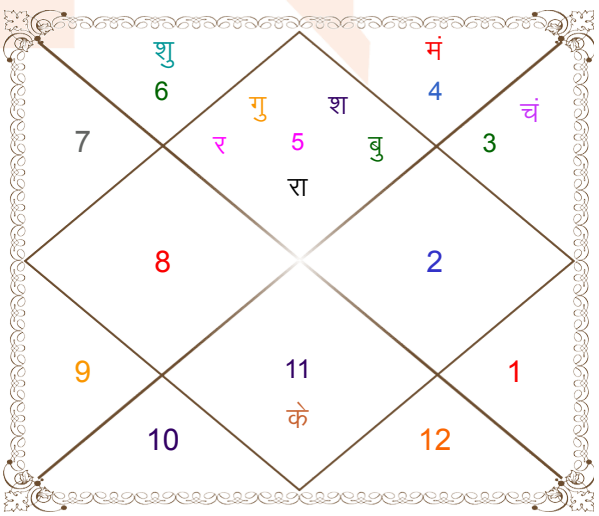

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : राहु 2 वर्ष 8 महिना 5 दिवस

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
15/09/1979		21/05/1982		21/05/1998		21/05/2017		21/05/2034	
21/05/1982		21/05/1998		21/05/2017		21/05/2034		21/05/2041	
	00/00/0000	गुरु	08/07/1984	शनि	24/05/2001	बुध	17/10/2019	केतु	17/10/2034
	00/00/0000	शनि	19/01/1987	बुध	01/02/2004	केतु	14/10/2020	शुक्र	17/12/2035
	00/00/0000	बुध	26/04/1989	केतु	12/03/2005	शुक्र	14/08/2023	सूर्य	23/04/2036
	00/00/0000	केतु	02/04/1990	शुक्र	11/05/2008	सूर्य	20/06/2024	चंद्र	22/11/2036
	00/00/0000	शुक्र	01/12/1992	सूर्य	23/04/2009	चंद्र	19/11/2025	मंगळ	20/04/2037
	15/09/1979	सूर्य	19/09/1993	चंद्र	23/11/2010	मंगळ	17/11/2026	राहु	09/05/2038
सूर्य	02/11/1979	चंद्र	19/01/1995	मंगळ	01/01/2012	राहु	05/06/2029	गुरु	15/04/2039
चंद्र	02/05/1981	मंगळ	26/12/1995	राहु	07/11/2014	गुरु	11/09/2031	शनि	23/05/2040
मंगळ	21/05/1982	राहु	21/05/1998	गुरु	21/05/2017	शनि	21/05/2034	बुध	21/05/2041

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
21/05/2041		21/05/2061		21/05/2067		21/05/2077		20/05/2084	
21/05/2061		21/05/2067		21/05/2077		20/05/2084		00/00/0000	
शुक्र	19/09/2044	सूर्य	07/09/2061	चंद्र	21/03/2068	मंगळ	17/10/2077	राहु	01/02/2087
सूर्य	19/09/2045	चंद्र	09/03/2062	मंगळ	20/10/2068	राहु	04/11/2078	गुरु	26/06/2089
चंद्र	21/05/2047	मंगळ	15/07/2062	राहु	21/04/2070	गुरु	11/10/2079	शनि	02/05/2092
मंगळ	20/07/2048	राहु	08/06/2063	गुरु	21/08/2071	शनि	19/11/2080	बुध	20/11/2094
राहु	21/07/2051	गुरु	27/03/2064	शनि	21/03/2073	बुध	16/11/2081	केतु	08/12/2095
गुरु	21/03/2054	शनि	09/03/2065	बुध	20/08/2074	केतु	14/04/2082	शुक्र	08/12/2098
शनि	21/05/2057	बुध	13/01/2066	केतु	21/03/2075	शुक्र	15/06/2083	सूर्य	15/09/2099
बुध	21/03/2060	केतु	21/05/2066	शुक्र	19/11/2076	सूर्य	20/10/2083		00/00/0000
केतु	21/05/2061	शुक्र	21/05/2067	सूर्य	21/05/2077	चंद्र	20/05/2084		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल राहु 2 वर्ष 8 मा 15 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगळ		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
19/11/2025		17/11/2026		05/06/2029		11/09/2031		21/05/2034	
17/11/2026		05/06/2029		11/09/2031		21/05/2034		17/10/2034	
मंगळ	10/12/2025	राहु	05/04/2027	गुरु	23/09/2029	शनि	13/02/2032	केतु	30/05/2034
राहु	03/02/2026	गुरु	07/08/2027	शनि	01/02/2030	बुध	02/07/2032	शुक्र	23/06/2034
गुरु	23/03/2026	शनि	02/01/2028	बुध	30/05/2030	केतु	28/08/2032	सूर्य	01/07/2034
शनि	19/05/2026	बुध	13/05/2028	केतु	17/07/2030	शुक्र	08/02/2033	चंद्र	13/07/2034
बुध	10/07/2026	केतु	06/07/2028	शुक्र	02/12/2030	सूर्य	29/03/2033	मंगळ	22/07/2034
केतु	31/07/2026	शुक्र	08/12/2028	सूर्य	12/01/2031	चंद्र	19/06/2033	राहु	13/08/2034
शुक्र	29/09/2026	सूर्य	24/01/2029	चंद्र	22/03/2031	मंगळ	15/08/2033	गुरु	02/09/2034
सूर्य	17/10/2026	चंद्र	12/04/2029	मंगळ	10/05/2031	राहु	10/01/2034	शनि	26/09/2034
चंद्र	17/11/2026	मंगळ	05/06/2029	राहु	11/09/2031	गुरु	21/05/2034	बुध	17/10/2034

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगळ		केतु - राहु	
17/10/2034		17/12/2035		23/04/2036		22/11/2036		20/04/2037	
17/12/2035		23/04/2036		22/11/2036		20/04/2037		09/05/2038	
शुक्र	27/12/2034	सूर्य	24/12/2035	चंद्र	11/05/2036	मंगळ	01/12/2036	राहु	17/06/2037
सूर्य	17/01/2035	चंद्र	03/01/2036	मंगळ	23/05/2036	राहु	23/12/2036	गुरु	07/08/2037
चंद्र	22/02/2035	मंगळ	11/01/2036	राहु	24/06/2036	गुरु	12/01/2037	शनि	07/10/2037
मंगळ	19/03/2035	राहु	30/01/2036	गुरु	23/07/2036	शनि	05/02/2037	बुध	30/11/2037
राहु	22/05/2035	गुरु	16/02/2036	शनि	25/08/2036	बुध	26/02/2037	केतु	22/12/2037
गुरु	18/07/2035	शनि	07/03/2036	बुध	25/09/2036	केतु	07/03/2037	शुक्र	24/02/2038
शनि	23/09/2035	बुध	25/03/2036	केतु	07/10/2036	शुक्र	31/03/2037	सूर्य	15/03/2038
बुध	22/11/2035	केतु	02/04/2036	शुक्र	11/11/2036	सूर्य	08/04/2037	चंद्र	16/04/2038
केतु	17/12/2035	शुक्र	23/04/2036	सूर्य	22/11/2036	चंद्र	20/04/2037	मंगळ	09/05/2038

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
09/05/2038		15/04/2039		23/05/2040		21/05/2041		19/09/2044	
15/04/2039		23/05/2040		21/05/2041		19/09/2044		19/09/2045	
गुरु	23/06/2038	शनि	18/06/2039	बुध	14/07/2040	शुक्र	10/12/2041	सूर्य	07/10/2044
शनि	16/08/2038	बुध	14/08/2039	केतु	04/08/2040	सूर्य	08/02/2042	चंद्र	07/11/2044
बुध	03/10/2038	केतु	07/09/2039	शुक्र	03/10/2040	चंद्र	21/05/2042	मंगळ	28/11/2044
केतु	23/10/2038	शुक्र	13/11/2039	सूर्य	21/10/2040	मंगळ	31/07/2042	राहु	22/01/2045
शुक्र	19/12/2038	सूर्य	03/12/2039	चंद्र	21/11/2040	राहु	30/01/2043	गुरु	12/03/2045
सूर्य	05/01/2039	चंद्र	06/01/2040	मंगळ	12/12/2040	गुरु	11/07/2043	शनि	09/05/2045
चंद्र	03/02/2039	मंगळ	30/01/2040	राहु	04/02/2041	शनि	20/01/2044	बुध	29/06/2045
मंगळ	23/02/2039	राहु	31/03/2040	गुरु	24/03/2041	बुध	10/07/2044	केतु	21/07/2045
राहु	15/04/2039	गुरु	23/05/2040	शनि	21/05/2041	केतु	19/09/2044	शुक्र	19/09/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र	
19/09/2045	
21/05/2047	
चंद्र	09/11/2045
मंगळ	15/12/2045
राहु	16/03/2046
गुरु	05/06/2046
शनि	10/09/2046
बुध	05/12/2046
केतु	09/01/2047
शुक्र	21/04/2047
सूर्य	21/05/2047

शुक्र - मंगळ	
21/05/2047	
20/07/2048	
मंगळ	15/06/2047
राहु	18/08/2047
गुरु	14/10/2047
शनि	20/12/2047
बुध	19/02/2048
केतु	14/03/2048
शुक्र	24/05/2048
सूर्य	15/06/2048
चंद्र	20/07/2048

शुक्र - राहु	
20/07/2048	
21/07/2051	
राहु	01/01/2049
गुरु	27/05/2049
शनि	16/11/2049
बुध	21/04/2050
केतु	23/06/2050
शुक्र	23/12/2050
सूर्य	16/02/2051
चंद्र	18/05/2051
मंगळ	21/07/2051

शुक्र - गुरु	
21/07/2051	
21/03/2054	
गुरु	28/11/2051
शनि	30/04/2052
बुध	15/09/2052
केतु	11/11/2052
शुक्र	22/04/2053
सूर्य	10/06/2053
चंद्र	30/08/2053
मंगळ	26/10/2053
राहु	21/03/2054

शुक्र - शनि	
21/03/2054	
21/05/2057	
शनि	20/09/2054
बुध	03/03/2055
केतु	10/05/2055
शुक्र	18/11/2055
सूर्य	15/01/2056
चंद्र	21/04/2056
मंगळ	27/06/2056
राहु	17/12/2056
गुरु	21/05/2057

शुक्र - बुध	
21/05/2057	
21/03/2060	
बुध	14/10/2057
केतु	14/12/2057
शुक्र	04/06/2058
सूर्य	26/07/2058
चंद्र	20/10/2058
मंगळ	19/12/2058
राहु	24/05/2059
गुरु	09/10/2059
शनि	21/03/2060

शुक्र - केतु	
21/03/2060	
21/05/2061	
केतु	14/04/2060
शुक्र	24/06/2060
सूर्य	16/07/2060
चंद्र	20/08/2060
मंगळ	14/09/2060
राहु	17/11/2060
गुरु	13/01/2061
शनि	21/03/2061
बुध	21/05/2061

सूर्य - सूर्य	
21/05/2061	
07/09/2061	
सूर्य	26/05/2061
चंद्र	04/06/2061
मंगळ	11/06/2061
राहु	27/06/2061
गुरु	12/07/2061
शनि	29/07/2061
बुध	14/08/2061
केतु	20/08/2061
शुक्र	07/09/2061

सूर्य - चंद्र	
07/09/2061	
09/03/2062	
चंद्र	22/09/2061
मंगळ	03/10/2061
राहु	31/10/2061
गुरु	24/11/2061
शनि	23/12/2061
बुध	18/01/2062
केतु	28/01/2062
शुक्र	28/02/2062
सूर्य	09/03/2062

सूर्य - मंगळ	
09/03/2062	
15/07/2062	
मंगळ	16/03/2062
राहु	05/04/2062
गुरु	22/04/2062
शनि	12/05/2062
बुध	30/05/2062
केतु	06/06/2062
शुक्र	28/06/2062
सूर्य	04/07/2062
चंद्र	15/07/2062

सूर्य - राहु	
15/07/2062	
08/06/2063	
राहु	02/09/2062
गुरु	16/10/2062
शनि	07/12/2062
बुध	22/01/2063
केतु	11/02/2063
शुक्र	06/04/2063
सूर्य	23/04/2063
चंद्र	20/05/2063
मंगळ	08/06/2063

सूर्य - गुरु	
08/06/2063	
27/03/2064	
गुरु	17/07/2063
शनि	02/09/2063
बुध	13/10/2063
केतु	30/10/2063
शुक्र	18/12/2063
सूर्य	01/01/2064
चंद्र	26/01/2064
मंगळ	12/02/2064
राहु	27/03/2064

सूर्य - शनि	
27/03/2064	
09/03/2065	
शनि	21/05/2064
बुध	09/07/2064
केतु	29/07/2064
शुक्र	25/09/2064
सूर्य	12/10/2064
चंद्र	10/11/2064
मंगळ	30/11/2064
राहु	21/01/2065
गुरु	09/03/2065

सूर्य - बुध	
09/03/2065	
13/01/2066	
बुध	22/04/2065
केतु	10/05/2065
शुक्र	30/06/2065
सूर्य	16/07/2065
चंद्र	11/08/2065
मंगळ	29/08/2065
राहु	15/10/2065
गुरु	25/11/2065
शनि	13/01/2066

सूर्य - केतु	
13/01/2066	
21/05/2066	
केतु	21/01/2066
शुक्र	11/02/2066
सूर्य	17/02/2066
चंद्र	28/02/2066
मंगळ	07/03/2066
राहु	27/03/2066
गुरु	13/04/2066
शनि	03/05/2066
बुध	21/05/2066

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	6
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 5
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिवस	मंगळ, रवि, गुरू
शुभ ग्रह	मंगळ, रवि, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	सूर्य मणि, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	पोवले
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गहू
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	97%	स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	83%	स्वास्थ्य, धनार्जन, धन
गोमेद	राहु	80%	स्वास्थ्य
पुष्कराज	गुरु	73%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
लहसुनिया	केतु	67%	दम्पति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	64%	धन, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पोवले	मंगळ	61%	कम खर्च, भाग्योदय, सुख
मोती	चंद्र	41%	हानि, व्यय
नीलम	शनि	28%	रोग, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

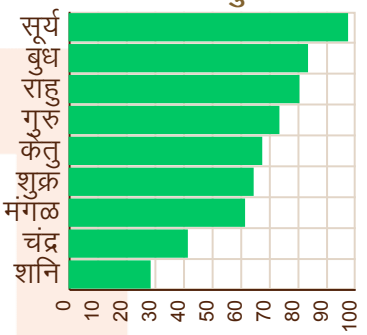

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	21/05/1982	84%	16%	47%	83%	73%	70%	41%	92%	55%
गुरु	21/05/1998	100%	52%	67%	70%	86%	52%	28%	80%	67%
शनि	21/05/2017	84%	16%	47%	89%	73%	70%	52%	86%	55%
बुध	21/05/2034	100%	16%	61%	95%	73%	70%	28%	80%	67%
केतु	21/05/2041	84%	16%	67%	83%	73%	70%	3%	67%	80%
शुक्र	21/05/2061	84%	16%	61%	89%	73%	77%	41%	86%	73%
सूर्य	21/05/2067	100%	52%	67%	83%	80%	52%	3%	67%	55%
चंद्र	21/05/2077	100%	58%	61%	89%	73%	64%	28%	67%	55%
मंगळ	20/05/2084	100%	52%	73%	70%	80%	64%	28%	67%	73%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज, लहसुनिया, हीरा एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती व नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति

होगी। सरकार से आपके अच्छ संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपका संचित धन बढ़ा सकता है। पन्ना रत्न को धारण कर आप के परिवार में वृद्धि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके कुटुंम्ब को एकसूत्र में बांधकर रख सकता है। पन्ना बुध आयेश का रत्न होने के कारण आपको बौद्धिक बल से धनार्जन करने के भरपूर अवसर दे सकता है। पन्ना रत्न की शुभता से आप को विभिन्न साधनों से आय प्राप्त हो सकती है। साथ ही इस रत्न को धारण कर आप अपनी वाकशक्ति में मधुरता एवं चतुरता दोनों का मिश्रण हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे है जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यो में अभिरूचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। पंचमेश गुरु लग्नेश सूर्य का मित्र है। अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न की शुभता आपकी आयु पर आने वाले कष्टों का निवारण कर सकती है। इस रत्न को धारण कर आप प्रीति विषय, आमोद-प्रमोद, सांसारिक सुख, संतान एवं ज्ञान को बढ़ा सकते है। रत्न की शुभता से आपको संतान प्राप्ति के योग बन सकते है। आप पुखराज रत्न कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता आपको गणित, ज्योतिश, धार्मिक ग्रंथ, वेद वेदान्त और दर्शन शास्त्र जैसे विषयों में आपकी रुचि जागृत कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि प्रथम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल

में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंड़ली में शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए उत्तम रहेगा। हीरा रत्न संयुक्त परिवार विचारधारा को बढ़ायेगा। हीरे की शक्तियों से आप अपने काम निकालने में सफल होंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको व्यवसायिक कुशलता देगा। यह रत्न आपको मधुरभाषी बनायेगा। सेवा क्षेत्रों में आपकी अभिरुचि बनेंगी। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए धन और सम्मान प्रदायक भी है। हीरे रत्न की शुभता से आप धनवान, यशस्वी, साहसी एवं भाग्यवान होंगे।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। आपके लिए मंगल रत्न मूंगा धारण करना शुभ फलदायक रहेगा। मूंगा रत्न धारण कर आप को प्रतियोगिताओं में विजयी बनाएगा। रत्न शुभता से आपके विरोधी आपको परेशान नहीं पर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको हिंसात्मक विचारों से दूर रखेगा। यह रत्न आपके छोटे भाई या बहन को बड़ा पद और प्रतिष्ठा दिला सकता है। मूंगा रत्न आर्थिक स्थिति को स्थिरता प्रदान करेगा। रत्न प्रभाव से आप व्यर्थ के व्ययों पर नियंत्रण बनाए रखेंगे। मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप मंगल रत्न मूंगा धारण करें।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर अत्यधिक चंचलता के कारण आप उचित निर्णय नहीं ले पाएंगे। आय क्षेत्रों में आपको अपनी योग्यता दिखाने के अवसर कम ही प्राप्त हो पाएंगे। सरकार के कामों में सहयोग करने की स्थितियां कम बनेंगी। चंद्र रत्न आपके सम्मान और पद प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकता है। आप को समाज में घुल

मिल जाने में समय लग सकता है। व्यापार के माध्यम से आपके लाभों में कमी हो सकती है। आय क्षेत्रों में अत्यधिक दायित्वों के कारण आप अपने परिवार को प्रयाप्त समय नहीं दे पायेंगे। यह रत्न आपके मातृ सुख में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपके लाभों में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यों में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः नीलम रत्न धारण करने पर आप कुछ हद तक हठी, उदासीन एवं आलस्य युक्त हो सकते है। यह रत्न आपके सकारात्मक भाव में कमी कर आपको निराशावादी बना सकता है। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। अतः इस रत्न के प्रभाव से आपके पुरुषार्थ भाव, वैवाहिक जीवन और कार्यक्षेत्र में बाधाओं की स्थिति बन सकती है। नीलम रत्न आपको भारी उद्योग से जुड़े व्यवसायों में हानि, आत्मविश्वास की कमी और धर्यहीनता का भाव दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको प्रपंचों में सम्मिलित करा सकता है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध
(21/05/2017 - 21/05/2034)

बुध की दशा में आपका माणिक्य, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, हीरा, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(21/05/2034 - 21/05/2041)

केतु की दशा में आपका माणिक्य, पन्ना व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, हीरा, मूंगा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(21/05/2041 - 21/05/2061)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, गोमेद, माणिक्य व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(21/05/2061 - 21/05/2067)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, पन्ना व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, गोमेद, लहसुनिया, मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(21/05/2067 - 21/05/2077)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, हीरा, मूंगा, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(21/05/2077 - 20/05/2084)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, लहसुनिया, पन्ना, गोमेद, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01ज्ञ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

मंगल द्वादश भाव में है। पुरुषार्थ से किये गए सभी कार्य आपके सफल हो सकते है। आपका स्वभाव कठोर, शंकालु, असत्यभाषी, अल्प धर्मपरायण, शत्रुहन्ता, मामा को कष्ट, बाहर के लोगों द्वारा धन-नाश, वात- पित रोगी, और संतान जन्य चिंता दे सकता है ।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के

लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
अष्टमस्थान चरण	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसातीचा पहला चरण	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
अष्टमस्थान चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टमस्थान चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थस्थान चरण	सम	धन
अष्टमस्थान चरण	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	अशुभ	व्यय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समय मधे मंगळ ची स्थिति द्वादश भावात आहे अतः आपण एक मांगळिक पुरुष आहे, पण शास्त्रनुसार तुमचा मांगळिक दोष भंग होत आहे हा मंगळ तुम्हाळा शुभ फळ देणार या मुळे शरीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहणार तसेच स्वभाव कडून खर्चे जास्ती होणारे. अशुभ कार्या पेक्षा शुभ कार्य वर जास्ती खर्चे होणार तसेच जीवन मधे सर्व सांसारिक भोग्य पदार्थ प्रसन्नता पूर्वक उपभोग कराय साठी समर्थ होणारे तुमची बायको चा स्वास्थ्य पण चांगळा रहणार तसेच दांपत्य जीवन सुखी होणार. यद्यपि मंगळ तुमचा साठी शुभ फळ देणार पण यांचा प्रभाव पासून विवाह काही उशीर होणार, पण विवाह कार्य अत्यंत शांति आणि सुखी होणार. आणि अनावश्यक त्रास नाय होणार विवाह नंतर पण तुमचा जीवन सुखी आणि शांति रहणार, जीवनात सर्व सुख साधन संपन्न होइळ तसेच शत्रु पण कमजोर होणारे आणि काही त्रास नाय होणार. तुमची जन्म कुंडळी मधे मंगळ द्वादश भावात स्थित आहे अतः मंगळ प्रभाव पासून शुभ कार्यात खर्चे जास्ती होणारे, सर्व भोग्य पदार्थ अर्जित आणि उपभोग करणारे तृतीय भावात दृष्टि होण्या मुळे परक्रमा चा नित्य वृद्धि होणारी तसेच निर्भय होउन आपले सर्व कार्य संपन्न करणारे आणि लोकांना प्रभावित करणारे भाऊ–ताई युद्ध रहणारे आणि सुख होणार. षष्ट भावात दृष्टि होण्या मुळे शत्रु पक्ष नेहमी निर्बळ (कमजोर) रहणारे आणि विरोध कराय साठी असमर्थ रहणारे सप्तम भावात मंगळ दृष्टि जीवन साथी साठी शुभ होणारी या साठी बायको चा स्वास्थ्य बरा होणार पण स्वभावात कधीं–मधीं उष्णता होणारी पण दुष्प्रभाव नाय होणार. तुमचे परस्पर संबन्ध चांगला आणि मधुर रहणारे, अतः दांपत्य जीवन फार आनंद युद्ध होणार अनावश्यक त्रास त्रास कधी नाय होणार. तुमचे दांपत्य जीवन जास्ती सुखी ठेवाय साठी तुम्हाळा असी मांगळिक कन्या वरोवर विवाह करायळा पाहिजे ज्यांचा मंगळ दोष भंग होउन जातात ह्या प्रकारी जर आपण दांपत्य जीवन शुरू करणारे तर जीवनात सर्व सुख सौभाग्य धन ऐश्वर्य सम्मान प्रतिष्ठा, पूर्ण प्राप्त होणारी. कुंडली मिलान समयावर जर कन्या ची कुंडळीत द्वादश मंगळ आहे तर होउ सकतात तर असी कन्या बरोबर विवाह नका करावे जास्ती आवश्यक असेल तर क सकतो पण असा भावात मंगळ कधीं–मधीं अनावश्यक त्रास उत्पन्न करतात ज्या मुळे दांपत्य जीवन प्रभावित होणार. इतर भावात मंगळ होण्या मुळे दोष समाप्त होउन जातात आणि जीवन सुख आणि शांति युद्ध व्यतीत होणार. अतः आखेर निर्णय खूप समझून कराय ला

पाहिजे ज्या मुळे दांपत्य जीवनात काही अडचणे किंवा त्रास नाय होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का ह्रास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में रवि, मंगळ और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ,

मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सटटे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म सिंह लग्नी झाला आहे. यामुळे आपले शारीरिक आरोग्य सामान्यपणे उत्तम राहील आणि बलवानही असेल. आपल्या व्यक्तिमत्वाची विशेषता ही आहे की आपण निडर व्यक्ती असाल आणि कुणाचीही पर्वा न करता कोणत्याही उच्च नेता किंवा अधिकारीशी चर्चा कराल. आवाजामध्ये थोडा खर्जातील असेल आणि कोणतेही काम आपण गांभीर्याने कराल. जेवण कमी असेल. आयुष्यात स्वकष्टाने अपेक्षित भौतिक सुखसाधने प्राप्त कराल आणि आनंदाने त्याचा उपभोग घ्याल. शत्रू किंवा विरोधकाना पराजित करण्यामध्ये नेहमी यशस्वी व्हाल आणि शत्रूचा मानहानी करण्यात गौरव वाटेल. उत्साहदेखील भरपूर असल्याने सांसारिक कोणतेही कार्य उत्साहपूर्वक संपन्न कराल. स्पर्धेमध्ये नेहमी यश मिळेल आणि विरोधक नेहमी भयभीत होऊन चिंतातूर असतील. पुत्रसंतती कमी असेल.

कधी कधी आपल्या स्वभावामध्ये उग्रत्वाचा भाव घष्टिगोचर होऊ शकतो. आपण एक आत्मविश्वासी व्यक्ती असाल आणि आपल्या बुद्धि, पराक्रम आणि कामावर पूर्ण विश्वास ठेवाल पण त्यामुळे कधी कधी तुम्ही दुसऱ्याला तुच्छ समजाल आणि त्यातून तुमच्या मानसन्मान व छबीवर विपरित परिणाम होऊ शकतो. माझ्यापेक्षा कोणी श्रेष्ठ नाही असाही भाव निर्माण होऊ शकतो. आपण एक सिद्धांतवादी पुरूष असाल आणि आपल्या सिद्धांतांच्या रक्षणासाठी कोणत्याही थराला जाण्याची वृत्ती असेल. मनामध्ये औदार्यही असेल आणि इतरेजनांवर प्रेम व सहानुभूती वेळोवेळी प्रदर्शित कराल. त्यामुळे समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठेत वृद्धि होईल आणि सर्व लोक आपला प्रभाव व पराक्रम स्वीकारतील.

आपल्या गुण व पराक्रमाने कोणत्याही कामात उच्च पद प्राप्त करू शकता. धार्मिक, दानी आणि विश्वासार्ह असल्याने उच्चाधिकारी किंवा एखाद्या संस्थेचा अध्यक्ष होऊ शकता. नेतृत्वक्षमता असेल आणि आपले अनुयायी आपल्याला आश्रयदाता समजून प्रामाणिकपणे आपल्या आज्ञेचे पालन करतील. धनसंपत्ती प्राप्त कराल, परंतु नोकर, कुलकार्य किंवा न्यायालयीन विवादांमुळे त्रासलेले असाल, म्हणून बुद्धिमत्तापूर्वक आपले काम पूर्ण करावे. त्याचबरोबर आपण इतर योग्य लोकांचा उचित सन्मान कराल तर सन्माननीय व्यक्ती होऊ शकता. यथोक्तम–

कृशोदरश्चारूपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्प भक्षः।
सुज्ञातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पञ्चानने सज्जनने विलग्ने।।

– जातकाभरणम

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मकुंडलीमध्ये द्वितीय भावामध्ये बुधाची कन्या राशी आहे. याचा प्रभावामुळे धनसंग्रह करण्याचा सदैव प्रयत्न कराल आणि त्यामुळे संकटकाळी आपल्यापाशी काही ना काही संपत्ती असेल. आदरातिथ्य करण्यामध्ये आपल्याला आनंद मिळतो. त्यामुळे वेळोवेळी आपल्या घरी इतरेजनांना आमंत्रण देत राहाल. आपले कौटुंबिक जीवन शांत व प्रसन्न असेल व कुटुंब समृद्ध असेल. त्याचबरोबर एकमेकांची सेवा व मदतीचा भाव कायम असेल. परंतु पैतृक संपत्ती आपल्याला कमीच प्रमाणात मिळेल आणि जे काही प्राप्त कराल ते स्वपराक्रम व कष्टाने मिळवलेले असेल.

हे स्थान वाणीचे आहे आणि याचा स्वामी बुध वाणीचा प्रतिनिधी आहे त्यामुळे आपल्या वाणीमध्ये माधुर्य असेल आणि इतरेंजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित कराल. त्याचबरोबर आपले विचार सरळ व स्पष्टपणे व्यक्त करू शकाल. त्याचबरोबर आपण आपल्या बुद्धिमत्तेने धनार्जन कराल आणि सुवर्ण आदि बहुमूल्य धातूंचा संग्रह करण्यास समर्थ असाल. अशाप्रकारे आपण धनवैभवाने युक्त आनंदाने आयुष्य व्यतित कराल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली माता एक सज्जन स्त्री असेल आणि घर सांभाळण्यास पूर्ण समर्थ आणि परस्पर सामंजस्य स्थापन करण्यास कुशल असेल. त्यामुळे कुटुंबामध्ये सुख शांती व समृद्धि राहील तसेच कुटुंबावर तिचे पूर्ण नियंत्रण असेल आणि सर्व कुटुंब तिच्या आज्ञेचे पालन करतील. ती कष्टाळू असली तरी कधी कधी शीघ्रकोपीपणा दाखवेल पण लगेच शांतही होत असेल.

आपले सुंदर घर असेल आणि घरामध्ये आपल्याला शांती लाभेल. आपल्या कार्यक्षेत्रामध्ये सतत व्यस्त राहात असल्याने गृहकार्यामध्ये कमीच लक्ष असेल. आधुनिक भौतिक सुखसुविधांनी संपन्न असाल आणि त्याचा उपभोग घ्याल. आपले घर फार मोठे नसले तरी सुंदर सजावटीमुळे त्याचे सौंदर्य आकर्षनीय असेल. तरूणपणीच आपले घर बनवाल. वाहनसुख लाभेल आणि वयाबरोबर यामध्ये वृद्धी होईल. पैतृक संपत्ती लाभेल. आपले उच्च शिक्षण व्यवसाय व्यवस्थापन किंवा विज्ञानासंबंधित विषयामध्ये असेल, पण उच्च शिक्षणामध्ये काही अडथळेदेखील येऊ शकतात. आपल्यासाठी तांत्रिक शिक्षण उत्तम व लाभप्रद ठरेल. कष्टाने व निष्ठेने आपले शिक्षण पूर्ण कराल. आपल्याला गुप्त धन, अंतप्रज्ञा व ज्योतिषसंबंधी विशेष ज्ञान प्राप्त होऊ शकते. शत्रूला पराजित करण्यास समर्थ असाल आणि इतरेजनांची सेवा कराल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक उद्योगी, साहसी व पराक्रमी व्यक्ती असाल. उच्च शिक्षण प्राप्त करण्याची नेहमी रूची असेल आणि यासाठी प्रयत्नसुद्धा कराल. यामध्ये कमीअधिक प्रमाणात यश मिळेल. आपण उच्च श्रेणीचे धार्मिक दार्शनिक व आस्तिक व्यक्ती असाल आणि धर्म आणि शास्त्रानुसारच आपले अधिकांशी सांसारिक महत्वाची शुभ कामे संपन्न कराल. गुरूच्या प्रभावामुळे आपण मुक्त विचारधारणेचे, आत्मविश्वासी व धार्मिक क्षेत्रात उन्नती करणारे व्यक्ती असाल आणि यामध्ये आपल्याला कीर्ती व मानसन्मान प्राप्त होईल. शिकण्याची तीव्र इच्छा असेल आणि शीघ्र नवनवीन विचारांचे सृजन करण्याची क्षमता असेल. आपल्याला अंतर्ज्ञन नेहमी सत्य असेल.

आपली पत्नी बुद्धिमान असेल आणि ती शांत स्वभावाची चतुर स्त्री असेल. आपल्यामध्ये ईश्वरावरील श्रद्धा व समत्वाची भावना वृद्धावस्थेत प्रबल होईल ज्यामुळे आपण अपेक्षित आदर व ख्याती प्राप्त कराल. परिस्थितीला अनुकूल करण्यासाठी पत्नी आपल्याला साथ देईल. संतती संख्या सीमित राहील आणि त्यांचा स्वभाव चांगला राहील. संतती बुद्धिमान असेल आणि आपल्या क्षेत्रात अपेक्षित यश प्राप्त करेल. वृद्धावस्थेत आपली श्रद्धापूर्वक सेवा करतील. उच्च शिक्षण प्राप्त करतील. वैदिक ज्ञान किंवा ज्योतिषावर आपली श्रद्धा असेल. याव्यतिरिक्त आपण वाहनादि साधनांनी सुसंपन्न, शत्रूनाशक, सज्जनांची सेवा करणारे व भाग्यशाली पुत्राने युक्त असाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, सुशील व चांगल्या स्वभावाची असेल. धर्मावर तिची श्रद्धा असेल. सत्याचे अनुसरण करेल आणि आपल्यावर तिची पूर्ण निष्ठा असेल ज्यामुळे आपले दाम्पत्यजीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतीत होईल. आपण एक भाग्यशाली व्यक्ती असाल आणि लाभमार्ग नेहमी प्रशस्त राहतील, पण प्रौढावस्थेमध्ये कधी कधी आर्थिक अडचणींचा अनुभव येईल. आपण स्वभावाने आदर्श प्रेमी आहात. जरी आपण कधी कधी उत्तेजित जरी झालात तरी पत्नीप्रती ईमानदार व विश्वासपात्र राहाल, पण प्रेमाचे प्रत्यक्ष प्रदर्शन क्वचितच कराल.

आपले सामाजिक क्षेत्र विस्तृत राहील. आपल्या पत्नीने तुमच्या मित्रवर्गाप्रती ईर्षा ठेवू नये, उलट अशा क्षणी प्रसन्नपणे आपल्याला तिने सहकार्य करावे आणि मनामध्ये कोणतीही शंका किंवा भ्रम ठेवू नये, अशी तुमची इच्छा असते. कौटुंबिक शांती व समृद्धि राखण्यात आपण यशस्वी ठराल. मुलांवर आपला लळा असेल आणि त्यांच्याबाबतीत अभिमानी असाल. आपण कधीही इतरांकडून आपल्या पत्नीचा अपमान कधीच सहन करणार नाहीत. मेष, धनु, मिथुन व कुंभ राशी किंवा लग्नाचा जातक आपल्याला युक्त आहेत. म्हणून विवाहासाठी याच राशीची पत्नी निवडावी. व्यवसाय क्षेत्रात आपण एखादी संस्था किंवा उद्योगात सन्माननीय पदावर कार्य करू शकता. याव्यतिरिक्त आपली पत्नी धार्मिक प्रवृत्तीची, प्रसिद्ध, सत्यवादी व दयाळू स्वभावाची असेल, जेणेकरून आपले दाम्पत्य जीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतीत होईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले वडीलांचे आरोग्य चांगले असेल. त्यांचा स्वभाव संवेदनशील असेल आणि आनंददायक जीवन व्यतित करण्यास आवडेल. ते एखाद्या चांगल्या पदावर आपल्या कार्यक्षेत्रात असतील. त्यांची माया व पूर्ण मदत आपल्याला मिळेल आणि त्यांची सेवा करण्यास आपणसुद्धा तत्पर असाल.

आपल्यासाठी एखाद्या प्रतिष्ठित उद्योगाचा व्यवस्थापक, संचालक किंवा विक्री व्यवस्थापकाचे पद अनुकूल असेल आणि अशा क्षेत्रामध्ये आपल्याला अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त होईल. त्याचबरोबर व्यापार किंवा सरकारी क्षेत्रामध्ये एखादे उच्च किंवा सन्माननीय पदसुद्धा प्राप्त करणे शक्य होईल. आपल्याकडे प्रशासनीक क्षमता असेल आणि न थकता खूप वेळ काम करण्यास सक्षम असाल.

राजकारणात विशेष रूची असणार नाही, पण जर आपण राजकारणात प्रवेश केला तर तिथे आपल्याला उचित सन्मान, कीती व राष्ट्रीय स्तरावर ओळख प्राप्त करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर आपण भौतिक उपकरणे, वीडिओ किंवा संगणक आदि क्षेत्रामध्ये यश प्राप्त होईल. विद्यालय व्यवस्था, आर्थिक क्षेत्रात कृषि भूमि व मालमत्ता आणि वित्त संस्थांमध्ये आपल्याला उचित लाभ प्राप्त होईल. याव्यतिरिक्त आपण स्वभावाने कार्यशील, सज्जन व दयाळू, सत्कमी, ज्ञानवान व चांगले आचरण असणारे व्यक्ती असाल आणि समाजामध्ये यथोचित सन्मान प्राप्त होत राहील.

फलादेश - 2025

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा आहे. ह्या काळात व्यापारात उन्नती होईळ. राजकीयदृष्टया देखीळ हा काळ महत्वाचा आहे. तुम्ही एरवाद्दा क्षेत्रात अधिकाराचे पद प्राप्त कराळ. नोकरी किंवा अन्य क्षेत्रात उन्नती होईळ. एरवाद्या महत्वाच्या पदावर नियुक्ती होण्याची शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छित धनळाभ संभवतो. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असल्याने हे वर्ष चांगळे व उन्नतीकारक असेळ.

यंदा गोचरीने राहू नवमात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य असेळ. ह्या काळात धर्माविषयी श्रद्धा वोटळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. भाग्य प्रबळ असेळ. शरीरप्रकृती चांगळी असेळ पण रागाच्या प्रबळतेमुळे मानसिक त्रास संभवतो. केतूच्या प्रभावाने तुमच्या पराक्रमात वाढ होईळ व सर्वजण तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व्यापार व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असेळ. त्यामुळे यंदा शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

बुध ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर 19/11/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ चा अंतर प्रारंभ होणार। चन्द्र एकादश भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण मंगळ द्वादश भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि विशेष आहे, अतः असे समय वर तुमचे अपूर्ण कार्य पूर्ण होणारे. व्यापार मधे उन्नती होणारी नोकरी मधे उन्नति होणारी नवीन कार्य प्रारम्भ होउ सकतो मित्र आणि सम्बन्धी पासून सहयोग प्राप्त होणार. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती रहणारी तसेच कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. काही तरी प्रवास पण होणारी आणि प्रवास पासून लाभ होणार. अतः असे समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आहे, अतः काही परिश्रम पासून जास्ती शुभ फळ प्राप्त होणार. महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होणार तसेच वांछित सफळता प्राप्त करणारे. व्यपार क्षेत्र मधे उन्नती होणारी. आर्थिक लाभ होणार तसेच भविष्य मिळकत साठी नवीन प्रयोजने करणारे. नोकरी मधे उन्नती आणि कुटुम्ब सुख शान्ती रहणारी तसेच परस्पर सहयोग प्रेम

स्थापित होणार. शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कधीं–मधीं सांसारिक खर्चे पण जास्ती होणार पण कोणी दुष्प्रभाव नाय होणार. काही तरी प्रवास होणारी पण जोखम कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे.

फलादेश - 2026

गुरु ह्यावर्षी गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या शुभ प्रभवाने तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. कौटुम्बिक सुखशान्ती व समृद्ध ीकरता हे वर्ष चांगळे आहे. ळोक प्रेमाने वागतीळ. ह्यावर्षी तुम्हाळा पुत्रप्राप्ती संभवते. खर्च वाढल्याने मन खिन्न असेळ. सामाजिक प्रतिष्ठेकरता हे वर्ष शुभ असेळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून आदर मिळवाळ. धार्मिक कार्यांची आवड निर्माण होईळ व वाणीमध्ये माधुर्य व ओजस्विता वाढेळ. अन्य ळोक तुमच्या बोळण्याने प्रभावित होतीळ. ह्यावर्षी माळमन्ता व व्यापारात इच्छित ळाभ मिळवाळ. पण यंदा अन्य गोचरफळ जास्त शुभ नसेळ व अशुभ फळे मिळतीळ. पण दशाफळ अनुकूळ असेळ. तथापि कधी–कधी उपर्युक्त चांगल्या फळांमध्ये न्यूनता येईळ, पण अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानी चांगळी फळे मिळतीळ.

यंदा शनी गोचरीने दहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष उन्नतीकारक असेळ. ह्या काळात व्यापरात उन्नती किंवा महत्वाचे बदळ संभवतात. त्याचबरोबर राजकीय क्षेत्रात महत्वाचे पद मिळेळ. राजकारणातीळ महत्वाच्या ळोकांशी संपर्क येईळ. नोकरीत पदोन्नतीची प्रबळ शक्यता आहे. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्तीचे योग आहेत. पण प्रकृतीकडे ळक्ष द्यावे. ह्या काळात रक्तचापासंबंधी त्रास उद्भवव्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असल्याने सुखातीळा त्रास झाळा तरी शेवटी चांगळी फळे मिळतीळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

बुध ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 17/11/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ द्वादश भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहे। पण राहु प्रथम भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्वपर्णू आहे ह्या वेळी व्यापार मधे उन्नती होणारी. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी मिळकत वृद्धि होउ सकतो नोकरी मधे उन्नतिची सम्भावना आहे। अधिकारयां पासून मधुर सम्बन्ध रहणार आध्यात्म आणि पराविद्या मधे चि उत्पन्न होणारी तसेच मनोविज्ञान चा अनुभव प्राप्त होणार बुद्धि पासून धन खर्च करणार. म्हणजे भविष्य साठी फायदे होऊ सकतो पण मित्र पासून सहयोग नाय भेंटणार अतः असे समय वर इतर माणूस बरोबर कम विश्वास कराय ला पाहिजे.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारे आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि

अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका. साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. शत्रु असफल होणारे आणि महत्वाकांक्षा सफळ होणारी.

फलादेश - 2027

यंदा गुरु गोचरीने तृतीय भावात असेळ म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा ळांबचे प्रवास ळाभदायकपणे सम्पन्न कराळ. त्यापासून तुम्हाळा धनप्राप्ती होईळ. ह्या काळात साहित्य आणि दर्शनशास्त्राची आवड निर्माण होईळ. यंदाच्या वर्षी जुन्या मित्रांचे सहकार्य मिळेळ व नवीन मित्र जोडळे जातीळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून भविष्यात ळाभ संभवतो. प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष सामान्यपणे चांगळे असेळ व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर संकुचितपणा सोडून विशाळ हृदयाने सर्वांना सामोरे जाळ. समाजात तुम्हाळा अपेक्षित आदर व मान मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी उत्तम व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात व्यापार, राजकारण किंवा अन्य क्षेत्रात उन्नती होईळ किंवा त्यात महत्वपूर्ण परिवर्तन होईळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात भरपूर धनप्राप्ती संभवते. समाजात तुमची कीर्ति वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ, व यथोचित सन्मान देतीळ. ह्या काळात प्रगती कराळ व उन्नती आणि सफळता मिळवाळ. पण मुंळाच्या व स्वतःच्या प्रकृतीविषयी जागरुक असावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे हे वर्ष शुभ व भाग्यशाळी ठरेळ.

गोचरीने यंदा राहू अष्टमात तर केतू द्वितीयात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ. ह्या काळात शारीरिक दृष्टया सुदढ़ असाळ. मनः शांती अनुभवाळ. कुटुंबात सुख–शांती व समृद्धी असेळ. सर्वजण प्रेमाने वागतीळ. सहकार्य करतीळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनळाभ संभवतो. यंदा आकस्मिक धनळाभ होण्याची शक्यता आहे. लॉटरी, सट्टा किंवा जुगारात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ, व परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये सम्पन्न कराळ. धनवृद्धी होण्याची शक्यता आहे. हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळ देणारे असेळ.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। महादशा आणि अंतर्दशा दोन्ही चा स्वामी प्रथम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गुरु गोचरीने तृतीय भावात असेळ म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा ळांबचे प्रवास ळाभदायकपणे सम्पन्न कराळ. त्यापासून तुम्हाळा धनप्राप्ती होईळ. ह्या काळात साहित्य आणि दर्शनशास्त्राची आवड निर्माण होईळ. यंदाच्या वर्षी जुन्या मित्रांचे सहकार्य मिळेळ व नवीन मित्र जोडळे जातीळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून भविष्यात ळाभ संभवतो. प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष सामान्यपणे चांगळे असेळ व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर संकुचितपणा सोडून विशाळ हृदयाने सर्वांना सामोरे जाळ. समाजात तुम्हाळा अपेक्षित आदर व मान मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी उत्तम व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात व्यापार, राजकारण किंवा अन्य क्षेत्रात उन्नती होईळ किंवा त्यात महत्वपूर्ण परिवर्तन होईळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात भरपूर धनप्राप्ती संभवते. समाजात तुमची कीर्ति वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ, व यथोचित सन्मान देतीळ. ह्या काळात प्रगती कराळ व उन्नती आणि सफळता मिळवाळ. पण मुंळाच्या व स्वतःच्या प्रकृतीविषयी जागरुक असावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे हे वर्ष शुभ व भाग्यशाळी ठरेळ.

गोचरीने यंदा राहू सप्तमात तर केतु ळग्नाळ असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. महत्वाची सांसारिक कार्ये ह्या काळात पूर्ण होतीळ. व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. यंदा पत्नीची प्रकृती मध्यम असेळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ. फळतः कौटुम्बिक जीवन सुखाचे असेळ. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात भागीदार किंवा सहकान्यांकडून ळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ. पण उपर्युक्त कार्यात उत्साह व पराक्रम दर्शवावा ळागेळ. बांधव व मित्रवर्गाकडून सहकार्य मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये यथासमय पूर्ण होतीळ. मिळकत वाढेळ. हे वर्ष सामाान्यतः शुभ असेळ.

ह्या वर्ष बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर रहणार। महादशा आणि अंतर्दशा दोन्ही चा स्वामी प्रथम भाव मधीं सिंह राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2029

यंदा गुरु गोचरीने चतुर्थ भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी भाग्यकारक असेळ. यंदा तुम्ही शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदढ़ रहाळ. त्याचबरोबर कौटुंबि सुख–शान्ती व समृद्धी असेळ. सर्व ळोक परस्पर स्नेहाने रहातीळ. पूर्वीच्या योजनांची व महत्वपूर्ण कार्यांची सफळता ह्या वर्षी संभवते. व्यापारात व कार्यक्षेत्रात ह्या काळात उन्नती व ळाभ होईळ. त्याचबरोबर समाजात उचित मान–सन्मान मिळेळ. यंदा घर, जमीन–जायदाद किंवा वाहनाचे सुख मिळेळ. ह्या शिवाय आई किंवा सासरहून ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर यंदा मिळकतीच्या दृष्टीने गोचर व दशाफळ अनुकूळ असल्याने हे वर्ष अत्यंत शुभ व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी अकराव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात व्यापार, राजकारण किंवा अन्य क्षेत्रात उन्नती होईळ किंवा त्यात महत्वपूर्ण परिवर्तन होईळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात भरपूर धनप्राप्ती संभवते. समाजात तुमची कीर्ति वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ, व यथोचित सन्मान देतीळ. ह्या काळात प्रगती कराळ व उन्नती आणि सफळता मिळवाळ. पण मुंळाच्या व स्वतःच्या प्रकृतीविषयी जागरुक असावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे हे वर्ष शुभ व भाग्यशाळी ठरेळ.

गोचरीने यंदा राहू सप्तमात तर केतु ळग्नाळ असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. महत्वाची सांसारिक कार्ये ह्या काळात पूर्ण होतीळ. व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. यंदा पत्नीची प्रकृती मध्यम असेळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ. फळतः कौटुम्बिक जीवन सुखाचे असेळ. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात भागीदार किंवा सहकान्यांकडून ळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ. पण उपर्युक्त कार्यात उत्साह व पराक्रम दर्शवावा ळागेळ. बांधव व मित्रवर्गाकडून सहकार्य मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये यथासमय पूर्ण होतीळ. मिळकत वाढेळ. हे वर्ष सामाान्यतः शुभ असेळ.

बुध ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 05/06/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। दोन्ही अंतर्दशा चा स्वामी ग्रह एकच भाव आणि राशि मधी स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नोकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः सगड़े उन्नती आणि लाभ होणार. मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर संबन्ध स्थापित होणार आणि वांछित लाभ होणार. शुभ कार्य आत्म विश्वास पासून सफळ होणार व्यापार मधे लाभ होणार नोकरी मधे उन्नती होणारी कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी आणि परस्पर सहयोग भेंटणार. फायदे ची प्रवास होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(21/05/2017 - 21/05/2034)

बुध की महादशा 21/05/2017 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 21/05/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरू के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(20/06/2024 - 19/11/2025)

आपकी बुध की महादशा 21/05/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 20/06/2024 को प्रारंभ होकर 19/11/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। ज्ञानार्जन और कला में रुचि होगी। बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनार्जन उत्तम होगा। लक्ष्य प्राप्त होगा। धन संचित होगा। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध अच्छे रहेंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। उच्चपद और खुशियों का संकेत है। आपकी संतान धनी बनेगी।

आपके जीवनसाथी सुखी रहेंगे, स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। आपके पिता सफल होंगे, उनकी विचार प्रस्तुति उत्तम होगी। आपकी माता के जीवन में परिवर्तन, अप्रत्याशित घटनाओं और अध्यात्म में रुचि का संकेत है।

आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे, पिता से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, धन और सुख प्राप्त होंगे। आपकी संतान को सामूहिक कार्यों से लाभ होगा, सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, यात्राएं होंगी, व्यापार में सफलता मिलेगी, धनागम होगा। परामर्शदाताओं को हर प्रकार से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; आंख और कान की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(19/11/2025 - 17/11/2026)

आपके लिए बुध की महादशा 21/05/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 19/11/2025 को प्रारंभ होकर 17/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपके कुछ व्यर्थ के खर्चे होंगे। धनसंचय में कठिनाई आ सकती है। कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। तकनीकी और बारीकी के कार्यों में दक्षता हासिल होगी। स्पर्धियों और शत्रुओं पर विजय मिलेगी। मुकदमे में जीत होगी। कला और साहित्य में रुचि होगी। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी, यात्राएं हो सकती हैं, वांछित सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी स्पर्धियों पर विजयी होंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति मिल सकती है; सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। माता की यात्राएं होंगी; धार्मिक स्थान पर जा सकती हैं।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, उच्चपद, प्रसिद्धि, धनलाभ, पारिवारिक सुख और खुशियों का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है, तबादला संभव है, अप्रत्याशित घटना घट सकती है, परिवर्तन हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी; आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों की स्पर्धियों पर विजय होगी; आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रविकार और पित्त से संबंधित व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(17/11/2026 - 05/06/2029)

आपके लिए बुध की महादशा 21/05/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/11/2026 को प्रारंभ होकर 05/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप में आत्मविश्वास रहेगा और सब बाधाओं को पार कर लेंगे। धन का लाभ होगा, नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। उच्च पद और सत्ता प्राप्त कर सकते हैं। समाज में सफलता मिलेगी, साझेदारी से लाभ होगा, घरेलू सुख रहेगा। व्यापार में अचानक प्रगति होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है। भौतिक सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी।

आपके जीवनसाथी की व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता सामाजिक, व्यापारिक और कार्यसंबंधी गतिविधियों में प्रगति करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन लाभ, प्रभावशाली मित्र, उत्साह, सौभाग्य और कार्य में अच्छी आय का संकेत है।

आपकी संतान की यात्रा होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, शिक्षा में प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धन, सुख के साधन प्राप्त करेंगे, यात्रा हो सकती है।
अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ होगा, यात्रा होगी। परामर्शदाता निवेश के लिए धन खर्च करेंगे; धनलाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे, यात्राएं होंगी, व्यस्तता बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर के ऊपरी भाग का खास तौर पर ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन भैरव रूप में शिवजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(05/06/2029 - 11/09/2031)

आपके लिए बुध की महादशा 21/05/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 05/06/2029 को प्रारंभ होकर 11/09/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न, सफल और धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। संतानसुख रहेगा। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में उन्नति हो सकती है। विवाह हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है। व्यापार में लाभ और विस्तार की संभावना है। धनी बनेंगे। यात्रा हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, कार्यक्षमता उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी को कार्यों और व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी होंगे; पारिवारिक सुख मिलेगा। माता सफल और प्रसिद्ध होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन का संचय, प्रभावशाली मित्र, यात्रा, सौभाग्य और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है। आपकी संतान सौभाग्यशाली होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो पिता से सकारात्मक संबंध होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को वर्तमान में किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों के धनार्जन में वृद्धि होगी; यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ॐ बृं वृहस्पतये नमः